IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मेरा जीवन मेरा संदेश

डॉ0 जितेन्द्र थदानी

सहायक आचार्य (संस्कृत)

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय

टजमेर

भारत देश अनेक पंथों, सम्प्रदायों, ग्रन्थों, सन्तों, महन्तों, ऋषियों, मुनियों और विचार धाराओं की अवतरण स्थली है, अनेक संतों और महापुरूषों ने अपने सन्देश और विचारधाराओं को लिपिबद्व कर ग्रन्थ के रूप में हमें प्रदान किया, तो कुछ महापुरूषों ने अपनी विचारधारा व मनीषा को अपने आचरण और कर्म के द्वारा सन्देश के रूप में हमें प्रदान किया, ऐसे महापुरूषों में महात्मा गांधी अर्थात् श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी का नाम अंगुलीगण्य विद्वानों की श्रेणी में आता है, जिन्होंने अपने जीवन, कर्म, अपने आचरण और अपने व्यवहार को ही सन्देश रूप में जनसामान्य तक पहुंचाया।

निश्चित रूप से महात्मा गांधी के जीवन पर राम, कृष्ण, मुहम्मद, ईसा, बुद्ध, महावीर, हरीशचन्द्र आदि की जीवनी का अभिन्न प्रभाव रहा, जो कि उनके आधार व्यवहार और कर्म में परिलक्षित होता रहा, कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने भी इस बात का वर्णन अपनी रचना नवसंस्कृति की शिला रख गया, भू पर चेतन में इस प्रकार किया है :–

देवपुत्र या निश्चय वह जन–मोहन मोहन,

सत्यचरण धर जो पवित्र कर गया धरा–कण।

विचरण करते थे, उसके संग विविध युग वरद–

राम, कृष्ण चैतन्य, मसीहा, बुद्व, मुहम्मद।।

(कवि सुमित्रानन्दन पन्त)

बापू के मेरा जीवन मेरा संदेश सम्बन्धी तत्व को सिन्धी के महाकवि बेवसि ने अपनी रचना साबरमतीय जो सन्तु में इस प्रकार वाणीबद्व किया है :–

तू किरोड़े हिन्दुवास्युनि बेजबाननि जी जबानु।

तुंहिंजी खामोशी बताए तेजु तुफानी बयानु।।

पाण ते परिख्या वठी पोई कीबि कहिणीय सां कही।

सो चवणु चाहीं न दिये बिये खे जो न खुद रहिणीय रहीं।।

(महाकवि बेवसि)

वस्तुतः महात्मा गांधी ना तो राजनैतिक विचारक थे और ना ही आध्यात्मिक विचारक थे, ना ही उन्होंने कभी अपनी विचारधारा के प्रवर्तन का दावा ही किया, अपितु वे एक योगी थे, उन्होंने अपना पूरा जीवन सत्य और अंहिसा के प्रयोग के प्रति समर्पित कर दिया।

उन्होंने स्वयं यह लिखा, ''**गांधीवाद नाम की कोई चीज नहीं है, और ना ही मैं अपने पीछे कोई ऐसा सम्प्रदाय छोड़कर जाना चाहता हूँ, मैं यह दावा नहीं करता की मैंने किन्हीं नूतन सिद्वान्तों को जन्म दिया है, मैंने तो व्यक्तिगत शैली में, शास्वत सत्य को दैनिक जीवन और उसकी समस्याओं पर लागू करने का प्रयोग मात्र किया है, मैंने जो निष्कर्ष निकाले हैं, और परिणाम घटित किए है, वे अन्तिम नहीं हैं, मैं कल उन्हें बदल भी सकता हूँ।**''

(कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी खण्ड–57 पृष्ठ–119)

एक बार गांधी जी ने किसी प्रश्न के उत्तर में कहा कि मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है, अर्थात् उन्होंने अपने अनुयायियों और आने वाली पीढ़ियों के लिए किसी व्याख्यान प्रवचन या उपदेश के द्वारा सन्देश प्रदान नहीं किया अपने जीवन और कर्मो, कर्तव्यों व कृत्यों से ही प्रेरणा लेने की बात कहीं है। गांधी जी ने सर्वप्रथम अफ्रीका में रंग–भेद के आधार पर अग्रेंजों द्वारा किए जा रहे अन्याय के विरूद्व संघर्ष करने का निश्चय किया और दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का प्रयोग किया।

गांधी जी के नेतृत्व में अनेक अश्वेत लोगों द्वारा किए गये सत्याग्रह के फलस्वरूप दक्षिण अफ्रीका की सरकार को रंग के आधार पर निर्मित भेदभाव पूर्ण नीतियों को रद्द करना पड़ा और अश्वेत नागरिकों को अनेक कानूनी अधिकार प्रदान करने पड़े। भारत में गांधी जी ने चम्पारन (बिहार) में सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग किया, उन्होंने कृषकों के विरूद्व हो रहे अन्याय के विरोध में सत्याग्रह प्रारम्भ किया फलस्वरूप सरकार ने उक्त प्रकरण में एक जांच समिति नियुक्त की, इस समिति ने कृषकों को अन्याय से मुक्ति एवं न्याय प्रदान करने हेतु अनेक सुझाव प्रदान किए।

वस्तुतः गांधी जी का पालन–पोषण एक संस्कारी परिवार में हुआ, बचपन में उन्होंने श्रवण की पितृभक्ति और हरीशचन्द्र की कथा से सम्बन्धित नाटक को अनेक बार देखा, राजा हरीशचन्द्र की सत्य के प्रति निष्ठा से गांधी जी अत्यन्त प्रभावित हुए, उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है :–

''अपने मन में मैंने उस नाटक को सैंकड़ो बार खेला होगा, मुझे हरीशचन्द्र के सपने आते, किन्तु हरीशचन्द्र की तरह सत्यवादी सब क्यों नहीं होते ? यह धुन बनी रहती, हरीशचन्द्र पर जैसी विपत्ति पड़ी वैसी विपत्तियों को भोगने और सत्य का पालन करना ही वास्तविक सत्य है।''

(महात्मा गांधी की आत्मकथा)

मलयालम के कवि वल्लतोल ने अपनी मलयालम रचना एनटे गुरूनायन में गांधी जी के जीवन पर ईसा के त्याग, कृष्ण की धर्म रक्षा, बुद्व की अहिंसा शंकरचार्य की प्रतिभा, रन्तिदेव की करूणा, हरीशचन्द्र के सत्य मुहम्मद की स्थिरतता के प्रभाव को इन शब्दों में कहा है :–

''कृस्तुदेवन्टे परित्याग शीलवुम साक्षात्
कृष्णनाम भगवान्टे धर्मरक्षोपायवुम्,
बुद्वन्ते अहिंसयुम, शंकराचार्यरूटे बुद्विशक्तियुम,
रविदेवन्टे दयावाय्पुम्,
श्री हरीशचन्द्रनुल्ल सत्यवुम, मुहम्मदिन
स्वैर्यवुम ओरालिल चेर्न्नोतु काणणमेंकिल।।

(कवि वल्लतोल)

गांधी जी के जीवन में बोए गए सत्य का बीज ही उनके जीवन के दर्शन और सन्देश का मूल आधार रहा, गांधी जी ने सत्य को ईश्वर का ही स्वरूप माना और एक बार तो उन्होंने सत्य ही ईश्वर है, ऐसा कहकर सत्य को ईश्वर का पर्यायवाची ही माना है, गांधी जी के अनुसार सत्य ही वह मूल तत्त्व है, जिससे सृष्टि के सम्पूर्ण तत्त्व निर्मित हुए है, और अस्तित्व में है, केवल सत्य ही शाश्वत् सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान् है, और सम्पूर्ण सृष्टि क्षणभंगुर है।

गांधी जी के अनुसार केवल सत्यवचन ही सत्य के प्रति उसकी निष्ठा का प्रमाण नहीं है, अपितु मन, वचन और आचरण तीनों ही सत्य से ओतप्रोत होने चाहिए, गांधी जी ने हमेशा ही प्रिय सत्य का समर्थन किया है, अप्रिय सत्य का हमेशा उन्होंने विरोध किया, इसके पीछे किसी को पीड़ित करने या दुःखी करने का भाव ना रहे, ऐसा उन्होंने अपने जीवन में प्रयास भी किया है, गांधी जी ने अगर सत्य को साध्य माना तो अंहिसा को उस सत्य की प्राप्ति का एकमात्र साधन माना, उनके अनुसार सत्य के बिना ईश्वर की प्राप्ति सम्भव नहीं है। वस्तुतः अंहिसा का यह विचार भारतीय उपनिषद् महावीर और बुद्ध के जीवन दर्शन से ग्रहण किया है। गांधी जी के विविध गुणों, विचारधाराओं और निष्ठाओं की मराठी के कवि राजकवि काळेले ने इस प्रकार वर्णन किया है :–

चर्खाचक्रधरा ! खादीविभूषणा !
हरिजनोद्धारा ! अखेरप्रणाम !
सत्याच्या आगरा ! करूणासागरा !
अहिंसेच्या मूर्ति ! प्रेमाच्या मोहरा !
दलिताच्या बन्धों ! दांडीच्या यात्रिका !
भारतच्या पित्या ! अखेर प्रणाम !

(राजकवि काळेले)

अहिंसा शब्द वस्तुतः निषेधात्मक और नकारात्मक शब्द है, जिसका तात्पर्य है, हिंसा का अभाव **न हिंसा इति अहिंसा**।गांधी जी ने इस अहिंसा शब्द के दो पक्षों को ना केवल उजागर किया, अपितु अपने जीवन में भी उचित स्थान

दिया। गांधी जी के विचार से निषेधात्मक अहिसां का अर्थ है–**''किसी भी प्राणी को मन, वचन या कर्म से हानि ना पहुंचाना, जबकि इस अहिसां का सकारात्मक अर्थ है, प्राणी मात्र के प्रति दया, प्रेम और करूणा का भाव होना।''**

(हरीजन)

गांधी जी ने हमेशा अहिंसा का मूल तत्त्व जीवमात्र के प्रति सहज प्रेम में माना है, इसी भाव से युक्त भक्त नरसी मेहता के इस भजन को प्रायः वे गाया करते थे, और ना केवल उन्होंने इस भजन का गायन किया, अपितु इसमें विद्यमान प्रेम व अहिंसा के भाव को अपने जीवन और कर्मो में भी प्रदर्शित किया :–

''वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ परायी जाणे रे।

पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान ना आणे रे।।

सकल लोकमां सहुने वंदे, निन्दा न करे केनी रे।

वाच काछ मन निश्छल राखे, धन–धन जननी तेनी रे।।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।

जिहवा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाय रे।।

वैष्णव जन तो .....।। ''

(नरसी मेहता)

गांधी जी के अहिंसा प्रेम अस्पृश्यता और सत्य के सन्देश से विश्व में, भारत में सर्वत्र शान्ति की स्थापना हुई, इसी भाव को पंजाबी कवि श्री मोहन सिंह इस रूप में कविताबद्ध करते है :–

सारे जग नु राण लेया, उस बिना युद्ध हथियारां।

पैरां विच समराट डिग पए, झुक गईयां तलवारां।।

भारत दे विच शान्ति वरती सोत प्यार दे वग्गे।

उच्चे–नीवें रल के बैठे, वीर वीरां गल लग्गे।।

(पंजाबी कवि श्री मोहन सिंह)

गांधी जी के अनुसार अहिसां कोई स्थूल या जड़ विचार नहीं अपितु एक आध्यात्मिक व नैतिक निष्ठा है, गांधी जी की अहिसां किसी प्राणी को कष्ट ना देने, पीड़ा ना पहुंचाने के भाव तक नहीं थी, अपितु दुःखों कष्टों से पीड़ित प्राणी को उसकी पीड़ा से मुक्त करने के सूक्ष्म तत्त्व पर अवलम्बित थी।

उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि कोई प्राणी असहनीय पीड़ा से कराह रहा है, जिसका उपचार असम्भव है तो उसे उस असहनीय पीड़ा से मुक्त करने की दृष्टि से मार डालना हिंसा नहीं माना जाएगा।

बापू ने अपने आश्रम में एक बछड़े को विष देकर केवल इसलिए मरवा दिया, क्योंकि वह प्राणी असहनीय पीड़ा से तड़प रहा था, और उसका कोई उपचार भी संभव नहीं था, यहां तक की उसकी पीड़ा तक कम नहीं की जा सकती थी, और ना उसे मृत्यु से बचाया जा सकता था, जब कुछ लोगों ने गांधी जी के इस निर्णय को संदेह की दृष्टि से देखा, तब उन्होंने स्पष्ट किया कि मेरा यह कृत्य पूर्णरूपेण अहिसंक था क्योंकि इसके पीछे मेरा कोई स्वार्थ निहित नहीं था, अपितु इस बछड़े को कष्ट से मुक्त करना था, उन्होंने निश्चयपूर्वक कहा **''यदि मेरा पुत्र भी इस परिस्थिति में होता तो भी मैं यही करता।''**

(कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी खण्ड–57 पृष्ठ–119)

असमिया के कवि चन्द्र कुमार आगरवाला ने बापू के सत्य अहिसां निश्छल व्यक्तित्व, दु:खियों की सहायता के भाव को इस प्रकार विवेचित किया है :–

सत्यत अटल आस्था निछला शरीर,

लुकाबले एको नाई नंगठा फकीर।

दु:खीयार दुखत वाकि हृदय रूधिर,

सर्वस्वान्त हला तुमि नंगठा फकीर।।

(कवि चन्द्र कुमार आगरवाला)

गांधी जी के इसी अहिंसा के मूल में सेवा का भाव भी दृष्टि गोचर व प्रेरणादायी रहा, गीताप्रेस गोरखपुर के कल्याण के सेवा अंक में कुछ उद्धारण देखने को मिले, दक्षिण अफ्रीका में निवास के समय जूलू युद्ध में घायलों की सेवा व परिचर्या गांधी जी की दिनचर्या का अविभाज्य अंग बन गई, गांधी जी ने कभी अपने अनुयायियों या साथ रहने वालों को प्रवचनों या शब्दों के द्वारा सेवा हेतु प्रेरित नहीं किया, अपितु स्वयं ही उस कार्य में प्रवृत हो गए।

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद सन्–1896–97 में राजकोट में फैले प्लेग के कारण बीमार व पीड़ितों की गांधी जी ने जुगुप्साहीन सेवा की। सेवा का एक अद्वितीय उदाहरण और दृष्टिगोचर होता है, कोचरभ आश्रम में मॉरिशस निवासी थम्बी नाइडू के पुत्र फकीरी नाइडू विद्यार्थी के रूप में निवास करते थे, एक बार चेचक से ग्रस्त होने पर बापू उनके मवाद से युक्त वस्त्रों को प्रक्षालित करते व उनके वस्त्र परिवर्तित करवा शुभ्र वस्त्र धारण करवाते थे।

साबरमती आश्रम में सांयकालीन प्रार्थना के पश्चात् सभी बीमारों का हाल–चाल पूछना और प्रार्थना सभा में अस्वस्थता के कारण अनुपस्थित रहने वाले लोगों के घर जाकर उनका कुशलक्षेम पूछते थे, और उनकी सेवा परिचर्या में जुट जाते थे। एक बार सन्–1922 में बापू की प्रथम जेल यात्रा के दौरान यरवदा जेल में एक अफ्रीकन कैदी भी था, उस कैदी को हाथ पर बिच्छू ने काट लिया, गांधी जी ने बिना किसी सोच विचार के उस डंक की जगह को चूसने लगे और उस रक्त को फैंकने लगे, शनै–शनै विष का प्रभाव शान्त होने से कैदी की पीड़ा शान्त हो गई।

एक अन्य प्रसंग के अनुसार 1938–39 में सेवाग्राम आश्रम में संस्कृत के महान् विद्वान कवि श्री दत्तात्रेय वासुदेव शास्त्री कुष्ठ रोगी के रूप में निवास करते थे, गलित कुष्ठ होने के कारण समाज से बहिष्कृत और तिरस्कृत होकर उस

आश्रम में पहुंचे, गांधी जी ने बिना किसी घृणा और द्वेष के उनकी सेवा की। उनके हाथों की मालिश मरहम पट्टी और घावों को धोने का काम गांधी जी स्वयं करते, इतना ही नहीं उनकी भोजन की थाली भी बापू के द्वारा पहले स्वयं देखने के पश्चात् शास्त्री जी उस भोजन को ग्रहण करते थे। जीवों के प्रति सेवा शुश्रुषा और सहानुभूति के अनेक उदाहरण हमें संदेश स्वरूप में प्राप्त हुए। **(कल्याण सेवा अंक–जन.–2015)**

इतना ही नहीं जीवों के प्रति प्रेम करूणा के भाव ने ही समाज में व्याप्त भेदभाव व छुआछुत के व्यवहार को देख गांधी जी के मन को उद्वेलित कर दिया, इसी भेदभाव व अस्पृश्यता का विरोध करते हुए गांधी जी ने समाज में निम्न माने जाने वाले वर्ग को हरिजन अर्थात् परमात्मा की सन्तान की संज्ञा दी।

गांधी जी की भारतीय संस्कृति और हिन्दु धर्म में अटूट श्रद्धा थी, उन्होंने प्राचीन काल से चली आ रही वर्ण व्यवस्था को भी हृदय से स्वीकार किया, उनके शब्दों में **"वर्ण व्यवस्था में बुनियादी तौर पर सोची गई समाज की चौमुखी बनावट ही, असली, कुदरती और जरूरी चीज दिखती है।"**

(वर्ण व्यवस्था)

बापू की मान्यता थी कि जो व्यक्ति जिस वर्ण में उत्पन्न हुआ है, उसी वर्ण का निर्धारित कार्य करना चाहिए, क्योंकि व्यवसाय का ज्ञान और विशेषज्ञता पर आनुवांशिकता प्रभाव डालती है, गांधी जी वर्ण व्यवस्था के तो समर्थक थे, किन्तु वर्ण या जाति के आधार पर भेदभाव, छुआछुत एवं अस्पृश्यता के घोर विरोधी रहे। महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने महात्मा गांधी को दलितों के कल्याणकर्ता, गतिहीनों के आश्रय एवं सन्त महात्मा की उपस्थिति दी है :–

सन्त महात्मा हो तुम जग के, बापू हैं, हम दोनों के।

दलितों के अभीष्ट वरदाता, आश्रय हो गतिहीनों के।।

(महाकवि मैथिलीशरण गुप्त)

गांधी जी ने अपनी पुस्तक हरिजन में लिखा है–**"विश्व में जो कुछ है, वह ईश्वर से व्याप्त है, अर्थात् ब्राह्मण व भंगी, पण्डित व मेहत्तर सब में भगवान् विद्यमान है, ना कोई ऊँचा है, ना कोई नीचा है, सभी समान है, समान इसलिए कि सभी उस सृष्टिकर्ता की संतान है।"** तत्कालीन समाज में हरिजन वर्ग साफ–सफाई व स्वच्छता का कार्य करता था, जिसके कारण वह घृणित दृष्टि से देखा जाता था, जिसके कारण गांधी जी ने अस्पृश्यता का विरोध करने के दृष्टिकोण से अपने आश्रम व आस–पास के क्षेत्र की सफाई का कार्य अपने हाथों से किया, जिससे की उनके इस कर्म द्वारा एक संदेश प्राप्त हो। गुजराती भाषा के कवि श्री राजेन्द्र शाह ने भी महात्मा गांधी के प्रेम करूणा और लोकोत्तर चरित्र की प्रशंसा इस प्रकार से की है :–

तुं व्यक्ति नहिं रे, समष्टि नहिं, किन्तु लोकोत्तर

तुं केवल लहाय नेमल स्वरूप, हे अक्षर !

(गुजराती कवि श्री राजेन्द्र शाह)

गांधी जी ने हमेशा साध्य और साधन की पवित्रता पर बल दिया, उनके अनुसार ना केवल साध्य नैतिक, शुद्ध और पवित्र होने चाहिए अपितु साधन भी उतना ही मात्रा में नैतिक शुद्ध और पवित्र होने चाहिए, वे कहते थे कि जैसा हम बोएगें वैसा

हम काटेगें, अहिंसा की स्थापना हिसां से नहीं हो सकती है, जहां प्रेम के स्थान पर विकर्षण की प्रक्रिया चल रही हो, वहां प्रेम कैसे स्थापित हो सकता है, जहां स्वयं विषमता की वृत्ति है, वहां कैसे विषमता दूर की जा सकती है। भेदभाव रहित समाज एवं प्रेम के विषय में गांधी जी के व्यवहार एवं आचार को कवि निरंकार देव सेवक ने अपनी रचना बापू के प्रति में इस प्रकार वर्णित किया है :–

भेदभावों से रहित था मुक्त उनका प्यार,

प्यार जिसका मद पिए था झूमता संसार,

शत्रु को भी मानते थे, वह स्वजन–सा गीत,

किस विरोधी को न पाई जीत उनकी प्रीत

(कवि निरंकार देव सेवक)

इन सबके अतिरिक्त गांधी जी की सामान्य दिनचर्या भी स्पृहणीय, अनुकरणीय और संदेश देने वाली रही, स्वास्थ्य की दृष्टि से उन्होंने पंचशील का सिद्वांत अपनाया हुआ था, जिसमें पांच प्रकार के शील या सदाचार को अपने दैनिक जीवन में नियमित स्थान दिया था, जिसमें भोजन संयम, जल का सेवन, व्यायाम, उपवास और संध्या, श्री मनोहरलाल गोस्वामी ने उनके इस आचरण को इस प्रकार दोहाबद्ध किया है :–

दो बार भोजन दो किलो जल और घण्टेभर व्यायाम।

साप्ताहिक उपवास और संध्या प्रातः शाम।।

(कल्याण दिनचर्या अंक–जन.–2010)

जीवन में कितनी भी व्यस्तता या विषमता रही हो, गांधी जी इन पंचशीलों के आचरण में शिथिलता को स्थान नहीं दिया, स्वास्थ्य की दृष्टि से आचरित पंचशील के अतिरिक्त बापू की दिनचर्या में द्वादशव्रत भी शामिल है, उन द्वादश व्रतों का प्रातः और सायंकालीन संध्याओं में दोहे के रूप में पाठ जरूर किया जाता था :–

अहिसां, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य असंग्रह।

शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जन।।

सर्वधर्म समानत्व, स्वदेशी स्पर्श भावना।

अनिन्दा व्रत निष्ठासे, द्वादश ये सेव्य है।।

(कल्याण दिनचर्या अंक–जन.–2010)

गांधी जी को भारत में सर्वोदय का प्रथम प्रयोगकर्ता माना जाता है, रस्किन की पुस्तक **''अन्टू दिस लास्ट''** के अध्ययन से उनके जीवन में एक विशिष्ट व्यवहारिक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ, गांधी जी ने इस पुस्तक का गुजराती में अनुवाद किया, जिसका नाम ''सर्वोदय'' अर्थात् सबका कल्याण नाम रखा। इस विचार के पीछे गांधी जी का मत था कि समाज में व्यक्ति का स्थान सर्वोपरि है, यदि व्यक्तियों का भला होता है, तो समाज का भी भला होता है।

उर्दू के प्रसिद्व शायर जोश मलीहाबादी ने भी बापू के पंथनिरपेक्षता को इन अल्फाजों में बयान किया है :–

ए गुरूरे हिन्दुओं, फखरे मुसलमां, अस्सलाम।
अस्सलाम ए हिन्द के शाहे शहीदां, अस्सलाम।।

(शायर जोश मलीहाबावी)

धनसंग्रह के विषय में गांधी जी में अपरिग्रह के सिद्वान्त का अनुकरण किया, उनका मानना था कि धन संचय की प्रवृति समाज की प्रगति में बाधक बनती है, वो कहते थे कि धन संचय के स्थान पर धन का विकेन्द्रीकरण इस समाज को नई दिशा व दशा प्रदान करता है, उन्होंने धन के आधार पर वर्ग रहित समाज की कल्पना की, यद्यपि वे समान वितरण व्यवस्था के समर्थक थे, तथापि वे समान वितरण के स्थान पर न्यायसंगत वितरण को अधिक महत्तव देते थे।त्र

(यंग इण्डिया)

इस अपरिग्रह के सिद्वान्त को व्यवहार रूप में परिणत करने हेतु न्यासिता अर्थात् ट्रस्टीशिप सिद्वान्त का पालन किया। **''उनके अनुसार धनी लोग न्यासी के रूप में अपनी सम्पत्ति को रखे व शेष को समाज हित में लगाए।''**

महात्मा गांधी की न केवल दीन दुःखियों की सहायता करने की वृति थी, अपितु भगवान एवं भगवद् भक्ति में भी उनकी पूर्ण आस्था थी, प्रतिदिन वे असंख्य राम नाम के जाप करते थे, जिसका प्रमाण जीवन के अंतिम क्षण में उनके मुख से निकला हुआ शब्द हे राम है, रामचरित मानस में श्री तुलसीदास जी लिखते है :–

''जनम–जनम मुनि जतन कराहिं।

अन्त राम केहि आवत नाहिं।।

अर्थात् जन्म जन्मान्तर भी अगर कोई यत्नपूर्वक राम का जाप करे तो भी आवश्यक नहीं है, कि अंतिम समय में राम का नाम मुख पर आ जाए।

राजस्थान के लक्ष्मणगढ़ निवासी बालूराम अढ़तियां जो कि राम नाम के आढ़ती के नाम से विख्यात थे, वे अपने साथ एक बही रखते थे, और किसी भी प्रमुख व्यक्ति के पास जाकर प्रार्थना करते थे, कि आप इसी बही में अपने हाथ से लिख दें कि प्रतिदिन आप इतनी संख्या में भगवान के नाम का जाप करेंगे।

एक बार गांधी जी मुम्बई आए हुए थे, आढ़तिया भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार जी के साथ बापू के पास पहुंचे और गांधी जी से प्रार्थना की कि आप राष्ट्र की स्वाधीनता के संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से प्रतिदिन राम नाम जाप का संकल्प ले तथा मेरी इस बही में हस्ताक्षर भी कर दे, तभी बापू पास में बैठे जमनालाल बजाज की ओर देखकर मुस्कुराए तथा बोले आप मुझे क्यों जाप की सीमा में बाध्य रहे है, जबकि मेरा तो निरन्तर राम नाम का जाप चलता रहता है, जब मैं अफ्रीका में या तब संख्या के अनुसार जाप करता था, किन्तु अब मेरा जाप निरन्तर चलता रहता है, ये थी बापू की राम नाम के प्रति आस्था।

इस प्रकार गांधी जी ने सत्य अहिसां सर्वोदय, सत्याग्रह न्यासिता, मानवाधिकार, स्वराज, राष्ट्रवाद, वर्ण व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, अस्पृश्यता आदि जिन भी सिद्वान्तों को प्रेरणा के रूप में या विरासत के रूप में आने वाली पीढ़ियों को

प्रदान किया, कभी भी उन सिद्वान्तों को केवल शब्दतः स्थानान्तरित न कर अपने कर्म द्वारा एक आदर्श मानक स्थापित कर संदेश रूप में आने वाली पीढ़ियों एवं अनुयायियों को हस्तानान्तरित किया। इसी बात का समर्थन सिन्धी के विख्यात कवि मोतीलाल जोतवानी ने इन शब्दों में किया है :–

तुंहिंजी आखाणी तबील तमसील जियां,

नितु पाणखे नई कन्दी रहे थी,

ऐ पोइ हर जमाने जे पढदंड या दिसंदड़ जे जहन में।

नयूं मानांऊ उजारे थी, नवां मक्सद उभारे थी।।